D1(H)

अशोक के धम्म का सामाजिक पहलू

प्रत्येक व्यक्ति को धर्मोन्नति के उपाय बताने के बाद पूरे समुदाय की आध्यात्मिक उन्नति के लिए अशोक ने निम्नलिखित नैतिक सिद्धान्तों पर चलने का उपदेश दिया।

(i) सहिष्णुता एवं एकता :- धर्मोन्नति के लिए सहिष्णुता आवश्यक माना गया है। अशोक के राज्यकाल में ब्राह्मण, श्रमण, निर्ग्रन्थ, आजीवक आदि विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों के अनुयायी एक दूसरे के प्रति द्वेष की भावना रखते थे। अशोक ने आपसी द्वेष को समाप्त करने के लिए उन्हें सहिष्णुता एवं एकता का पाठ पढ़ाया। इसके धर्म को समान आदर की दृष्टि से देखना चाहिए।

(ii) सामान्य स्थल पर निवास :- अशोक का कहना था कि सभी पंथ वाले सर्वत्र वास करें ताकि वे एक दूसरे को अच्छी तरह समझ सकें और उनमें सहिष्णुता की भावना उत्पन्न हो सके।

(iii) एक दूसरे के धर्म-ग्रन्थ का अध्ययन :- अशोक ने विभिन्न धर्मों के अनुयायियों को एक दूसरे के धार्मिक ग्रन्थों के अध्ययन का उपदेश भी दिया ताकि वे एक-दूसरे के भावों को समझ सकें। इससे धर्मोन्नति में सहायता मिलेगी।

(iv) अहिंसा :- अशोक ने मनुष्य और अन्य जीवों के प्रति अहिंसा का मार्ग अपनाने पर अधिक बल दिया। अहिंसा का सिद्धान्त केवल व्यक्तिगत जीवन तक ही सीमित नहीं था बल्कि राजनीति और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में भी अहिंसा के सिद्धान्त का पालन हुआ। युद्ध और हिंसा द्वारा प्राप्त विजय के मार्ग को छोड़कर धर्म विजय के मार्ग को अशोक ने पूरी तरह अपनाया।

अशोक का धम्म व्यावहारिक था। वह रूढ़िवादी, कर्मकाण्डवादी, बाह्य आडम्बरपूर्ण, झूठे

Scanned with CamScanner

गूढ़ क्रियावादी, दर्शनमूलक तथा सूक्ष्म तत्वापेक्षी नहीं अशोक का धर्म किसी एक व्यापक स्वरूप के अन्तर्गत नहीं था। उसके व्यापक उपदेश व्यापक नैतिक नियमों के संकलन थे उसका धर्म सर्वमंगलमयी था। जिसका उद्देश्य प्राणिमात्र का उद्धार करना था। सभी प्राणियों के प्रति अहिंसा उसके धर्म का महत्वपूर्ण सिद्धान्त था। उसका धर्म उसके शासन और जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया था। उसने अपनी प्रजा के ऐहिक और पारलौकिक हित और सुख के लिए ही धर्म का उपदेश दिया।

Next

अशोक के धर्म की विशेषताएँ